देवदास और देवदासियां

शहर-शहर बसते हैं देवदास!
पथराई आंखों
चाक-गिरेबां वाले देवदास
सिगरेट के धुओं से
फ़ेफ़ड़े छलनी करते
मदिरा की गंध में
श्वासों के चिह्न टटोलते
अंधेरी सड़कों की निस्तब्धता पे
अकारण ठहाके लगाते
शमा की चाह में
जल चुके देवदास
खिलने की आकांक्षा में
मिट चुके देवदास
वे 'शरीर' नहीं बस 'आत्मा' हैं
'आत्मा' जो सम्भवत: उनकी नहीं
हां, मगर दूसरी ओर...
गली-गली बसती हैं देवदासियां!
मन्दिरों में प्रमाणित
और घरों, झोपड़ों में अघोषित
किसी 'देव' को 'देवता' बनाकर
पागल सी पूजती ये दासियां
जिन्होंने सीखा नहीं प्रश्न करना
अपने 'अश्रुओं' से उनके 'पाप' धोतीं
उनके 'अहम' से अपना 'अभिषेक' करतीं
चूल्हों की आग में
सपनों को राख कर चुकी देवदासियां
चूड़ियों की खनक में
अपनी 'चीखें' दफ़ना चुकी देवदासियां
ये 'आत्मा' नहीं बस 'शरीर' हैं
'शरीर' जो सम्भवत: उनका नहीं!

मरियम उस्मानी वाया ईमेल

भाइयों और बहनों धैर्य रखिये !
2019 तक केरल क्या समूचे भारत की तुलना सोमालिया से हो सकेगी

नालायक सरकार के निकम्मे अफ़सरों की वजह से रूका मैट्रो का काम

बल्लबगढ़ (म.मो.) सरकार कब्जाये बैठे नेतागण केवल लफ़्फ़ाजी करने व झूठ बोलने में माहिर हैं। भाषणों में ये लोग मैट्रो रेल को नहर पार ग्रेटर फ़रीदाबाद-पलवल व गुड़गांव तक ले जाने की घोषणायें करेंगे; लेकिन ज़मीनी स्तर पर न ये खुद कुछ करने लायक हैं और न इनकी निकम्मी अफ़सरशाही।

वाइएमसीए से बल्लबगढ़ तक मैट्रो ले जाने के लिये गत 6-7 वर्षों पहले संघर्ष शुरू हुआ। दो वर्ष पूर्व विधिवत काम भी शुरू हो गया। इस रेल का ट्रेक किस रास्ते बल्लबगढ़ तक पहुंचेगा इसके लिये कहां-कहां कितनी ज़मीन चाहिये, यह सब तय होने के बाद ही मैट्रो का निर्माण कार्य शुरू हुआ था। उसके बावजूद आज कई दिनों से मैट्रो निर्माण कार्य रूका खड़ा है, क्योंकि लफ़्फ़ाजी करने वाली सरकार इसके लिये आवश्यक भूमि उपलब्ध नहीं करा पा रही है। यदि सरकार भूमि उपलब्ध कराने में असमर्थ थी तो यह प्रोजेक्ट शुरू ही क्यों कराया था? विदित हो कि मैट्रो का काम इस प्रकार रूकने से लाखों रुपये रोज़ का नुकसान होता है, जो अन्तत: जनता को ही झेलना होता है।

काम रूकने के बाद सरकार के कान पर जूं रेंगी तो चंडीगढ़ से एक आला अधिकारी (अतिरिक्त मुख्य सचिव) राघवेंद्र राव यहां तशरीफ़ लाये। उन्होंने तमाम सम्बन्धित अधिकारियों से वार्तालाप किया तथा मैट्रो को आवश्यक भूमि उपलब्ध कराने के लिये एक कमेटी गठित कर दी। क्या कमाल है! अभी कमेटी बनी है, वार्ताओं के दौर चलेंगे, ड्रामेबाजियां होंगी और तब तक मैट्रो का काम रूका खड़ा रहेगा।

आज होने वाली इस नौटंकी की अपेक्षा यह मामला 2-3 वर्ष पहले ही निपटा लिया जाता तो क्या हर्ज था? जो मुआवज़ा अथवा दुकान के बदले दुकान देने की बात सरकार आज कर रही है, यही सब अगर शुरू में ही कर लेती तो यह नुक्सान तो न होता। परन्तु यह तो सरकार है, ऐसे ही धीरे-धीरे सरकती है, रही बात नुकसान की तो वह न तो नेताओं का हो रहा और न ही अफ़सरों का, जनता का होता है तो होता रहे, जनता बनी ही भुगतने के लिये है।

ईएसआई अस्पताल ऐसे तड़पाते हैं मज़दूरों को

फ़रीदाबाद (म.मो.) 30 वर्षीय काशी नाथ पृथला स्थित ऑटो इग्निशन कम्पनी में काम करते हैं। उनके 10,000 मासिक वेतन का साढे 6 प्रतिशत यानी 650 रुपये मासिक ईएसआई निगम इनसे झटक लेती है। दिनांक 21.4.16 को कम्पनी की बस से ड्यूटी जाते वक्त इनके हाथ की कोहनी में गंभीर चोट लग गयी। तुरन्त सेक्टर 8 स्थित ईएसआई अस्पताल ले जाया गया। वहां भर्ती करके 22 तारीख को ठेके पर रखे एक अनाड़ी व लालची डॉक्टर गुप्ता ने उनका ऑप्रेशन कर दिया। इसके लिये काशी नाथ से 10,000 का सामान भी बाजार से मंगवाया गया जिसका भुगतान बाद में ईएसआई कर देगी।

ऑप्रेशन के बाद भी काशी नाथ को जब कोई आराम महसूस नहीं हुआ तो उन्होंने डॉक्टर से शिकायत की। दो दिन तक टर्काने के बाद डॉक्टर ने उनका एक्सरे किया तो पता लगा कि हड्डियां तो ज्यो की त्यों टूटी पड़ी हैं। अपने सिर से बला टालने के लिये डॉक्टर गुप्ता ने उन्हें 25 को एनएच-3 के मेडिकल कॉलेज के लिये रैफ़र कर दिया । वहां पहुंचे तो वहां के डॉक्टरों ने 9 मई की तारीख ऑप्रेशन के लिये तय कर दी। उस तारीख पर गये तो 12 मई की तारीख तय कर दी। उस तारीख पर इस बड़े अस्पताल के ऑप्रेशन थियेटर में बिजली की तारें आदि जलने से ऑप्रेशन कार्य बन्द करना पड़ा।

समझा जा सकता है कि 21 अप्रैल से दर्द के मारे तड़प रहे इस मज़दूर के साथ क्या बीत रही होगी। जिसने अपने इलाज के लिये एडावांस पैसा दे रखा हो उसके बावजूद उसको भीखमंगों की तरह दौड़ाया जा रहा हो। काशीनाथ के परिजनों द्वारा कहा-सुनी करने पर उन्हें 13 मई को नौएडा स्थित यथार्थ नामक अस्पताल के लिये रैफ़र कर दिया गया। रैफ़र करने की प्रक्रिया भी कम जटिल नहीं है। करीब 4 से 5 घंटों तक एक कमरे से दूसरे कमरे, एक बाबू से दूसरे बाबू तक भिखारियों की तरह भटकना पड़ता है। खुद तो इलाज ईएसआई करती नहीं रैफ़र करने में ज़ोर बहुत पड़ता है।

13 मई को गिरते-पड़ते काशी नाथ नौएडा पहुंचे। वहां उन्हें भर्ती तो कर लिया गया लेकिन खबर लिखे जाने तक उनका कोई इलाज नहीं हुआ। हां 16 मई को ऑप्रेशन की तारीख जरूर तय की गयी है। देखना है कि 16 मई को क्या होता है।

क्या है यह सारा मामला? 21 अप्रैल को घायल हुए काशी नाथ का यदि कायदे से इलाज किया जाता तो सारा काम एक से दो दिन का ही था। प्लस्तर चाहे कितने दिन में खुले लेकिन आराम तुरन्त मिल जाना था। उसे एक-दो दिन में हो सकने वाले काम के लिये ईएसआई ने उसे 23 दिन तक रूलाने के बाद इलाज के लिये एक सही जगह भेजा है। यद्यपि वह सही जगह भी मज़दूर के लिये कोई बहुत सही नहीं है। वहां तक उनके परिजनों एवं तीमारदारों का आना-जाना कोई आसान नहीं होता। इतने दिन की जो दिहाड़ियां टूट रही है वे अलग से।

यह सब हो क्या रहा है? सेक्टर 8 के अस्पताल में तैनात हड्डियों का विशेषज्ञ डॉक्टर ठेके पर केवल खानापूर्ति के लिये है। उनके द्वारा किया गया शायद ही कोई ऑप्रेशन कामयाब होता हो। हां 10,000 रुपये का सामान जो काशी नाथ से खरीदवाया गया था, उसमें से डॉक्टर साहब को 2-4 हज़ार कमीशन जरूर मिल जायेगा। इसी के चक्कर में उन्होंने यह केस छेड़ा था। वरना पहले दिन भी तो रैफ़र कर सकते थे।

एनएच-3 वाले अस्पताल में डॉक्टर तो एक से एक बढ़कर बढिया हैं और काम करने के इच्छुक हैं। लेकिन उनके सिर पर बैठा प्रबन्धन, सीधे तौर पर कहें तो एमएस (मेडिकल सुप्रिंटेंडेंट) उन्हें कुछ करने देना नहीं चाहता। नई बिल्डिंग में ओटी (ऑप्रेशन थियेटर) बहुत बढिया बने खड़े हैं बरसों से, लेकिन ऑप्रेशन हो रहे हैं अभी पुराने ओटी में जहां न बिजली लाइनों की सही व्यवस्था है न अन्य साजो-सामान की। एक सी आर्म नाम का छोटा सा उपकरण है, जिसके माध्यम से हड्डियों का सर्जन ऑप्रेशन करता है, उसकी मांग पिछले कई सालों से की जा रही है, लेकिन खरीदा नहीं जा रहा है। इसी तरह की और भी अनेकों रूकावटें खड़ी की गयी हैं जिनकी वजह से न चाहते हुए भी डॉक्टरों को केस रैफ़र करने पड़ते हैं। इसके लिये सबसे बड़े जिम्मेदार खुद मज़दूर भी हैं जो उनके वेतन से हर महीने लूटने वालों का गिरेबान पकड़ने की बजाय इनके सामने या तो गिड़गिड़ाते हैं या चुपचाप अन्य विकल्प अपना लेते हैं।

अवैध निर्माणों की नींव पर खड़ा करेंगे स्मार्ट सिटी

फ़रीदाबाद (म.मो.) नगर निगम अधिकारियों की मिलीभगत के चलते शहर में अवैध निर्माणों की बाढ़ सी आई हुई है। जिसके चलते शहर का ढांचा ही बदल गया है। वहीं दूसरी तरफ़ बिल्डर अवैध निर्माणों के साथ-साथ सरकारी ज़मीनों पर भी कब्ज़ा कर फ़्लैट बनाकर बेच रहे हैं। एनएच 5 नम्बर में बिल्डरों द्वारा पिछले कुछ एक महीना में 200 से ऊपर फ़्लैट बनाकर खड़े कर दिए है। जिनमें से कुछ तो बनकर आबाद भी हो चुके हैं। बिल्डरों द्वारा बनाये गये ये फ़्लैट किसी भी दृष्टि से सुरक्षित नहीं हैं। घटिया निर्माण सामग्री से निर्मित इन फ़्लैटों की डिजाइन व नक्शों में भी भयंकर खामियां हैं। चोरी से व जल्दबाज़ी में बनाये गये इन फ़्लैटों में निर्माण मानकों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता।

जहां एक तरफ़ सरकार फ़रीदाबाद को स्मार्ट सिटी बनाने पर करोड़ों रुपये खर्च कर रही है, वहीं दूसरी तरफ़ नगर निगम अधिकारी व बिल्डर फ़रीदाबाद को खटारा सिटी बनाने पर लगे हुए हैं। वहीं जानकारों का कहना है कि नगर निगम प्रत्येक फ्लैट के बिल्डरों से 50,000 रुपये वसूलते हैं। जिसमें अवैध पानी सीवरेज के कनेक्शन तक लगाने की छूट होती है। मार्किट चाहे 5 नम्बर की हो या 1, 2, या 3 नम्बर की हो, सभी में दुकानदारों द्वारा सड़कों पर कब्ज़े कर रखे हैं। नगर निगम वाले पूरे दल-बल के साथ यदा-कदा इन्हें खदेड़ने का नाटक करते हैं और चले जाते हैं। कब्ज़े ज्यों के त्यों बरकरार रहते हैं। हां, इस नाटकबाज़ी पर निगम का लाखों रुपये जरूर बर्बाद हो जाता है। समझना मुश्किल नहीं कि नगर निगम की इसी नाटकबाज़ी के द्वारा अधिकारी दुकानदारों को यह सन्देश देते हैं कि अवैध कब्ज़ों के एवज़ में उनकी सेवा-पानी बदस्तुर चलती रहनी चाहिए।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. **आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,**
2. **प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,**
3. **रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,**
4. **रैंक, 45 नीलम चौक,**
5. **एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,**
6. **राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,**
7. **हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।**
8. **जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207**
9. **स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब**